International Journal of Economic Perspectives,*16*(5), 275-277
Retrieved from https://ijeponline.org/index.php/journal

सन **1857** ईस्वी से पूर्व आदिवा सयों का ब्रिटिशों के खलाफ वद्रोह

डॉ त्रिलोचन कौर
मकन न**. 1203** सैक्टर **4,** कुरूक्षेत्र

भू मका :-- आज से 150 वर्ष पहले 10 मई 1857 ई. को देश में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के खलाफ मुक्ति युद्ध की शुरुआत हुई। इस लए 10 मई का दिन ऐतिहा सक ही नहीं बल्कि महत्वपूर्ण भी है और इसका एक अलग इतिहास भी है। जनता ने अपनी मुक्ति के लए एक जोरदार अंगड़ाई ली, तो दूर बैठी अंग्रेजी सरकार की आंखों की नींद हराम हो गई। वडंबना दे खए इस भारतीय स्वतंत्रता संग्राम को जहां अंग्रेज इतिहासकारों ने सपाही वद्रोह करार दिया और वदेशी चश्माधारी हमारे अपने अनेक इतिहासकारों ने उनके स्वर में स्वर मलाया वहीं वख्यात सेनानी वी. डी. सावरकर, जिन्होंने अनेक तथ्यों और तर्कों के आधार पर इसे अंग्रेजो के खलाफ भारतीयों के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के रूप में सद्ध कया। स्वाधीन भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं डत जवाहरलाल नेहरु ने भी इसे गदर की संज्ञा दी है।१ सच तो यह है क 1857 की जन क्रान्ति जिसे सपाही वद्रोह और गदर कहा गया वास्तव में यह कसान असंतोष और अ भजात्य वर्ग के अ धकारों पर अंग्रेजों द्वारा कए गए जोरों जुल्म, अत्याचार का परिणाम था। जिसको अंग्रेजों के दमन,शोषण और अत्याचारों ने परवान चदाया। यहीं वे हालात थे जिनके चलते व भन्न वर्गो धर्मों एवम संप्रदायों के लोगों ने ब्रिटिश हकूमत के खलाफ एक होकर संघर्ष का फैसला कया।

इसी देश के कुछ गद्दार स्वार्थी लोगों ने जिनमें पंजाब के कतिपय रजवाड़े भी शा मल थे। यदि उस समय इस आंदोलन को स क्रय सहयोग दिया होता या कम से कम अंग्रेज़ लोगों के साथ मलकर तलवार न उठाई होती तो भी देश का इतिहास बदल गया होता। भले ही इस गद्दारी का ईनाम उन्हें पद,पद वयों या छोटे छोटे भूखंडों के रुप में मल गया हो परन्तु उन्होंने देश क स्वतंत्रता को एक शताब्दी पीछे धकेल दिया फ़र भी इस आंदोलन ने अंग्रेज़ साम्राज्यवाद की नींव हिला दी। यह एक ऐसा झटका था जिसका परिणाम 90 वर्ष बाद देश की स्वंत्रता के रूप में सामने आया। ऐसा नहीं क वदेशी दासता की पीड़ा इससे पहले महसूस न हुई हो और इसका प्रतिरोध और वरोध न हुआ हो। ये प्रयास छुटपुट रूप में एक प्रयास थे। जिन्हे नितांत निर्ममता और क्रूरता के साथ कुचला गया। ऐसा ही एक संघर्ष बिहार- झारखंड के आदिवासी संथालों द्वारा कया गया जिससे अंग्रेज़ शासक दहल गए थे। इसे हम भारतीय स्वतन्त्रता संग्राम की पूर्व पठिका और अंग्रेज़ सरकार को एक चेतावनी के रूप में अं कत कर सकते हैं। इसे अ धक स्पष्ट करने के लए हमें कुछ और पछे जाते हुए उन परिस्थितियों और कारणों का वश्लेषण करना होगा जिनसे ये वस्फोटक हालत पैदा हुए।२

वषय प्रवेश अंग्रेज़ भारत में व्यापार क दृष्टि से आए थे। सोलहवीं सदी के उत्तरार्ध में लगभग सारा यूरोप भीषण आ र्थक मंदी के दौर से गुज़र रहा था। इसका वशेष प्रभाव इंगलैंड की अर्थव्यवस्था पर भी पड़ा जिसके फलस्वरूप यह चरमराने की अवस्था तक पंहुच गई। इस स्थिति से उबरने का एक ही उपाय था क व्यापार के लए नई मं डयों की खोज की जाए।इसके लए भारत में उन्हें अ धक संभवानाएं नजर आईं। कुछ तिकड़मी व्यापारियों ने मलकर ईस्ट इण्डिया कम्पनी के नाम से एक स्वार्थी,कुटिल और षड्यंत्रकारी व्यापारिक संस्था

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ त्रिलोचन कौर

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

खड़ी की जिसे सन 1600 ईस्वी में अंग्रेज़ सरकार ने भारत में कारोबार के अवसर तलाशने की अनुमति प्रदान कर दी। कोलकाता में ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पहला कार्यालय खुला। यहीं से उसने अन्यत्र भी पैर फैलाने शुरू कर दिए। प्रारम्भ में वभिन्न नगरों में व्यापारिक केंद्र स्था पत करने के पश्चात् ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने 18वी सदी तक आते- आते अपने राजनीतिक वस्तारवादी इरादे प्रकट कर दिए थे। जब एक के बाद एक अनेक छोटी मोटी रियासतों को छल या बल से अपने अधीन लाना शुरू कर दिया।३ सन् 1757 ईस्वी में प्लासी क लड़ाई और 1763 ईस्वी में उधवनाला की जीत के साथ कम्पनी ने बिहार- झारखंड में अपनी स्थिति मजबूत कर ली थी। यह क्षेत्र खनिजों एवं प्राकृतिक संपदा से भरपूर था। कम्पनी ने इसका दोहन शुरू कर दिया। सन् 1765 ईस्वी में इसने शाह आलम द् वतीय से बंगाल तथा उड़ीसा की दीवानी छीन ली।इस पूरे भूखंड में अपनी सत्ता को और मजबूत बनाने के लए इन लोगों ने डरा धमकाकर या प्रलोभन से कुछ स्थानीय लोगों को भी साथ मला लया। स्थाई प्रबंध के नाम पर इन सबने मलकर अत्याचार, आतंक, तिरस्कार और उत्पीड़न का ऐसा दमन चक्र चलाया क सारा संथाल क्षेत्र त्राहि- त्राहि कर उठा। युगों से उनकी बापौती रहे वन,पर्वत संथाल आदिवा सयों के लए पराये हो गए थे। उनके जीवन का आधार प्राकृतिक वनोपज पर उनका अ धकार नहीं रहा था। दैनिक चर्या के अ भन्न अंग मृगया पर पाबन्दी लगा दी। इस पर बहु बेटियों को इज्जत का लुटना और बोझ बेगारी अलग था।४

अतिशय अत्याचार और दमन अन्ततः वद्रोह को जन्म देता है। यहां भी यही हुआ।यहां के आदिवासी अ श क्षत थे। नई रोशनी और प्रगति से अन भज्ञ थे परन्तु वे वीर,जुझारू और अपनी आन पर मटने वाले थे। वे वदेशी शोषकों के वरुद्ध उठने के लए ववश हो गए। लगभग 100 साल तक उन्होंने कभी इक्का दुक्का तो कभी संगठित रूप में कम्पनी की सत्ता को बार-बार ललकारा था। फर चाहे उनके वरोध को कठोरतापूर्ण कुचल दिया गया हो। इस प्रकार आजादी की लड़ाई का शंख 1857 ईस्वी से बहुत पहले ही इन संथाल आदिवा सयों ने सन् 1795 ईस्वी में फूंका गया। इस सल सले में सबसे पहला नाम तिलका मांझी का आता है।जिसने कम्पनी सरकार की सत्ता को अस्वीकार करते हुए कर देने से इन्कार कर दिया। स्थाई प्रबन्ध के अंतर्गत अंग्रेजों द्वारा थोपी गई व्यवस्था के वरुद्ध सन 1798 ईस्वी में तमाड़ क्रान्ति का बिगुल बजा था। दो साल बाद दुखन मांझी तत्पश्चात सदन कोंता मुंडा ने इस क्रान्ति को जी वत रखा। सन् 1831ईस्वी में संगराई मानकी के नेतृत्व में रांगभूम क्षेत्र में कोल क्रान्ति का ज्वालामुखी दहका।वस्तुतः यही लोग भारतीय स्वंतत्रता संग्राम के ध्वजवाहक थे जिन्होंने परवर्ती आंदोलनों को पथनिर्देश दिए। इनके वरोध को क्रूरता से कुचल दिया गया। कतना खून बहा, कतनी जानें गई, इसका सही आंकलन न तो अंग्रेजों द्वारा लखे इतिहास ग्रंथो मे मलता है और न ही उनके तलछट जीवी अन्य इतिहासकारों ने इसका ब्योरा दिया।उस क्षेत्र की लोक गाथाएं अवश्य इस नृशंस रक्तपात का ह्रदय वदारक वर्णन प्रस्तुत करतीं हैं जिससे जंगल की धरती सन गई थी तथा पर्वतों को च ानें लाल हो गई थी। इस संघर्ष की अगली हुंकार सन 1855 ईस्वी में सुनाई दी गई जब सद्धो मुर्मु तथा उसके तीन भाइयों कान्हु, चांद और भैरव ने संथाल युवा वर्ग को संगठित कर महान हुल का नगाड़ा बजाया। जिसने कम्पनी सरकार की नींव हिला दी। आदिवासी लोग सद्धो मुर्मू को लोक देवता का प्रतिनि ध मानते थे। उनके अनुसार वह प्रथम क्रांतिकारी तिलका मांझी का नया अवतार था। उसके एक इशारे पर सैकड़ों नवयुवक प्राणों की आहुति देने के लए उद्धत हो जाते थे। उसका संघर्ष "अबुआ दिशोम" यह देश हमारा है। के लए था।५ बाहर की दुनियां के साथ अ धक संपर्क न होने के कारण उसका अपना देश चाहे संथाल क्षेत्र तक ही सी मत था परन्तु इस संघर्ष से को चंगारी फूटी थी उसी

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ त्रिलोचन कौर

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022

से आने वाले महासंग्राम की ज्वाला प्रज्ज्व लत हुई।६ सद्धो का सपना था क अंग्रेजों और उनके प ुओं को अपने क्षेत्र से खदेड़ कर उसके जल, जंगल और जमीन पर एका धकार प्राप्त करना। उसके लए मार्ग था अ वरत संघर्ष।उसकी ' हूल' वदेशी सत्ता के वरुद्ध भारतीयों की पहली संगठित और नियोजित लड़ाई थी।७ परंतु यह तो दो असमान शक्तियों की टक्कर थी। एक तरफ अंग्रेजों की सशस्त्र सेना की बारूद उगलती हुई बंदूकें और तोपें और दूसरी तरफ आदिवा सयों की पारंपरिक कुल्हाड़ी व तीर कमान जैसे ह थयार, फर भी उन्होंने निर्भीक होकर शत्रु का सामना कया। 'हुल' को प्रारंभ में कुछ सफलताएं भी प्राप्त हुई परंतु वशाल शत्रु सेना का मुकाबला कहां तक कया जा सकता था ? कसी सहायता या समर्थन के अभाव में हुल कमजोर पड़ गई सद्धू को छल से सद्धू सद्धो को छल से पकड़कर अत्यंत अमानु षक ढंग से फांसी दी गई और उसके सा थयों को चुन-चुन कर मौत के घाट उतारा गया। इस आंदोलन में हर आदिवासी परिवार का एक ना एक सदस्य अवश्य ब ल चढ़ा।लोगों की सामूहिक रुप से हत्याएं की गई। अंग्रेजों की बर्बरता अपने क्रूरतम रूप में यहां देखने को मली। रक्त की एक भी बूंद बहाए बिना आजादी प्राप्त करने का दंभ करने वालों को शायद इस रक्त की लाली नजर नहीं आई।कुर्बानियों की यह लंबी परंपरा प्राय: उपे क्षत की रही।८ सद्धो मुर्मू जीते जी "अबुआ दिसोम" के अपने सपने को साकार होते नहीं देख पाया। मरते समय उसने कहा था "मैं मरूंगा ले कन 'हुल' तब तक जी वत रहेगी, जब तक अंग्रेज इस देश से नहीं निकल जाते। यह अलग-अलग रूपों में प्रकट होगी।" यह घटना सन 1856 ईस्वी की है । सन 1857 ईस्वी में यही 'हुल' अपने उग्रतम रुप में प्रकट हुई। स्वतंत्रता की इस यज्ञ ज्वाला में होम होने वाली इन हुतात्माओं को शत-शत नमन ।

संदर्भ

१ जवाहरलाल नेहरू, डस्कवरी ऑफ इं डया, दिल्ली, पृष्ठ 185, अलवी सीमा, दा सपाही एंड द कंपनी, ऑक्सफोर्ड वश्व वद्यालय, 1996, पृष्ठ 340

२ एंडरसन कलेयर, इं डयन अपराईजिंग आफ 1857-58, न्यूयॉर्क,2007, पृष्ठ, 217

३ व पन चंद्रा,इन्डिया स्ट्रगल फॉर इं डपेंडेंस, दिल्ली पृष्ठ 41

४ उपरोक्त, पृष्ठ 43

५ उपरोक्त, पृष्ठ 49

६ एल. एस. एस. ओ. माले,बंगाल
डस्ट्रिक्ट गजेटियर, संथाल परगना,पृष्ठ 120

७ बि पन चंद्र पूर्वोक्त, पृष्ठ 48

८ टी.एस.ब्लोग्स,1857: म्यूटीनी इन संथाल परगना,रांची, 2008, पृष्ठ 49

© 2022 by The Author(s). ISSN: 1307-1637 International journal of economic perspectives is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

Corresponding author: डॉ त्रिलोचन कौर

Submitted: 27 Dec 2021, Revised: 09 January 2022, Accepted: 18 February 2022, Published: May 2022